IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.22259715

ISSN : 3048-6971

विकसित भारत @2047 और युवाओं का कौशल विकास : दीनदयाल उपाध्याय वैचारिकी के विशेष सन्दर्भ में

अंकित जम्वाल(शोधार्थी),
दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

शोध-सारांश

भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका संबंध सक्षम मानव संसाधन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगारपरक कौशल, उद्यमिता, नवाचार, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आत्मनिर्भरता से भी है। भारत विश्व की सर्वाधिक युवा आबादी वाले देशों में है और यही युवा शक्ति विकसित भारत के निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण आधारशिला बन सकती है। भारत सरकार की नीतियों में कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा, अप्रेंटिसशिप, स्टार्टअप, डिजिटल दक्षता तथा उद्यमिता को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया जा रहा है। 2026 में नीति आयोग की Reimagining Skilling for Viksit Bharat@2047 रिपोर्ट ने भी भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए कौशल-आधारित मानव पूंजी को केंद्रीय प्राथमिकता माना है।

इस संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की एकात्म मानववाद की वैचारिकी महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। उनके चिंतन में मनुष्य को केवल आर्थिक इकाई न मानकर शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित रूप में देखा गया है। अतः युवाओं का कौशल विकास केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन न होकर उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व, आत्मनिर्भरता, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण की क्षमता का विकास होना चाहिए। उपाध्याय के स्वदेशी, विकेंद्रीकरण, आर्थिक लोकतंत्र, अंत्योदय और आत्मनिर्भरता संबंधी विचारों को वर्तमान कौशल विकास की नीतियों के साथ जोड़कर विकसित भारत की अधिक मानवीय एवं समावेशी विकास-दृष्टि निर्मित की जा सकती है। प्रस्तुत आलेख इसी वैचारिक एवं नीतिगत संबंध का विश्लेषण करता है तथा युवाओं के कौशल विकास को विकसित भारत @2047 के लक्ष्य से जोड़ने के लिए कुछ व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: विकसित भारत @2047, युवा, कौशल विकास, दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, आत्मनिर्भरता

प्रस्तावना

भारत आज जनसांख्यिकीय दृष्टि से एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। यह युवा आबादी भारत के लिए केवल जनसांख्यिकीय लाभांश नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की संभावनाओं का आधार है। भारत सरकार ने युवाओं को 'अमृत पीढ़ी' के रूप में देखते हुए शिक्षा, कौशल, उद्यमिता, नवाचार और नेतृत्व के माध्यम से उन्हें विकसित भारत के निर्माण में सहभागी बनाने पर बल दिया है। वर्ष 2047 में भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होंगे। इस अवसर तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना में उच्च प्रति व्यक्ति आय, आधुनिक अवसंरचना, तकनीकी क्षमता, सामाजिक सुरक्षा और गुणवत्तापूर्ण जीवन के साथ-साथ सक्षम एवं उत्पादक मानव संसाधन की आवश्यकता होगी। इस दृष्टि से युवा कौशल विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्त करने की प्रक्रिया के बजाय ज्ञान, कौशल, चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व विकास से जोड़ने पर बल दिया है। नीति में व्यावसायिक एवं अकादमिक शिक्षा के बीच कठोर विभाजन को समाप्त करने तथा 21वीं सदी के कौशलों को विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं।

दूसरी ओर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद मनुष्य के सर्वांगीण विकास को केंद्र में रखता है। उनके अनुसार विकास का लक्ष्य केवल भौतिक समृद्धि नहीं बल्कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलित एवं समन्वित संबंध

स्थापित करना है। दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक दृष्टि में स्वदेशी, विकेंद्रीकरण, आर्थिक लोकतंत्र और अंतिम व्यक्ति तक विकास के लाभ पहुँचाना महत्वपूर्ण है।

अतः विकसित भारत @2047 की दृष्टि को दीनदयाल उपाध्याय की वैचारिकी के साथ जोड़कर देखने से कौशल विकास का एक ऐसा भारतीय मॉडल सामने आ सकता है, जिसमें रोजगार के साथ आत्मनिर्भरता, तकनीकी दक्षता के साथ मानवीय मूल्य और आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय हो।

साहित्य समीक्षा

दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन पर उपलब्ध साहित्य में एकात्म मानववाद को उनके प्रमुख दार्शनिक प्रतिपादन के रूप में देखा गया है। उनके 1965 में मुंबई में दिए गए चार व्याख्यान एकात्म मानववाद की मूल वैचारिक आधारभूमि प्रस्तुत करते हैं। इन व्याख्यानों में उन्होंने भारतीय जीवन-दृष्टि के आधार पर व्यक्ति और समाज के संबंध, राष्ट्र, अर्थव्यवस्था तथा विकास की वैकल्पिक अवधारणा पर विचार किया।

दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार एकात्म मानववाद व्यक्ति को समाज से अलग स्वतंत्र इकाई के रूप में देखने के बजाय पारस्परिक निर्भरता और पूरकता के आधार पर देखता है। इसमें अंतिम व्यक्ति अर्थात् 'अंत्योदय' को भी विकास प्रक्रिया का महत्वपूर्ण केंद्र माना गया है।

सुरेश कुमार सोनी की Deendayal Upadhyaya: A Vibrant Humanist में उपाध्याय के मानववाद का सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में उनके विचारों के पाठगत एवं संदर्भगत विश्लेषण के माध्यम से एकात्म मानववाद की समग्र प्रकृति को समझने का प्रयास किया गया है।

समकालीन साहित्य में कौशल विकास को रोजगार, उत्पादकता और आर्थिक विकास से जोड़कर देखा गया है। भारत सरकार के कौशल विकास संबंधी दस्तावेजों में मांग-आधारित, गुणवत्तापूर्ण तथा उद्योग-संगत कौशल विकास पर बल दिया गया है।

नीति आयोग की 2026 की रिपोर्ट ने भविष्य के कार्यक्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, हरित संक्रमण और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में परिवर्तन के कारण कौशल विकास को और अधिक महत्वपूर्ण माना है।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि कौशल विकास और एकात्म मानववाद पर अलग-अलग पर्याप्त विमर्श उपलब्ध है, किंतु विकसित भारत @2047, युवा कौशल विकास और दीनदयाल उपाध्याय की वैचारिकी के अंतर्संबंध पर समन्वित अध्ययन की अभी भी पर्याप्त संभावनाएँ हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतर को संबोधित करने का प्रयास है।

शोध के उद्देश्य

1.विकसित भारत @2047 की अवधारणा में युवा शक्ति की भूमिका का विश्लेषण करना।

2.भारत में वर्तमान कौशल विकास की नीतियों एवं कार्यक्रमों का अध्ययन करना।

3.दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में मानव एवं कौशल विकास संबंधी अंतर्निहित विचारों को समझना।

4.युवा कौशल विकास और आत्मनिर्भर भारत के बीच संबंध का विश्लेषण करना।

5.दीनदयाल उपाध्याय की वैचारिकी के आधार पर कौशल विकास के भारतीय मॉडल की संभावनाओं का अध्ययन करना।

6.विकसित भारत @2047 के लिए युवा कौशल विकास को अधिक प्रभावी बनाने हेतु समाधान प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

1.विकसित भारत @2047 के निर्माण में युवा कौशल विकास की क्या भूमिका है?

2.वर्तमान कौशल विकास व्यवस्था युवाओं की रोजगार एवं उद्यमिता संबंधी आवश्यकताओं को किस सीमा तक पूरा कर रही है?

3.दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद युवा कौशल विकास को किस प्रकार वैचारिक आधार प्रदान कर सकता है?

4.कौशल विकास को आत्मनिर्भरता, स्वदेशी और अंत्योदय की अवधारणाओं से कैसे जोड़ा जा सकता है?

5.विकसित भारत @2047 के लिए वर्तमान कौशल विकास व्यवस्था में किन सुधारों की आवश्यकता है?

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक एवं वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद संबंधी मूल व्याख्यान एवं उनके विचारों से संबंधित दस्तावेज सम्मिलित हैं। द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी नीतिगत दस्तावेज, नीति आयोग की रिपोर्ट, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, कौशल विकास संबंधी सरकारी रिपोर्ट तथा आधिकारिक डिजिटल स्रोत शामिल हैं।

अध्ययन में पाठ-विश्लेषण (Textual Analysis), विषय-वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) तथा तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) की सहायता से दीनदयाल उपाध्याय की वैचारिकी और वर्तमान कौशल विकास नीति के बीच संबंध स्थापित किया गया है।

शोध अध्ययन

1. विकसित भारत @2047 और युवा शक्ति

विकसित भारत @2047 की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानव पूंजी है। भारत के युवाओं में तकनीकी दक्षता, उद्यमिता, नवाचार, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित किए बिना विकसित राष्ट्र की परिकल्पना को पूर्ण करना कठिन होगा।

भारत सरकार ने युवा विकास को शिक्षा, कौशल, रोजगार, उद्यमिता, खेल, नवाचार तथा नागरिक सहभागिता से जोड़ने का प्रयास किया है। 2026 में आयोजित Viksit Bharat Young Leaders Dialogue ने युवाओं को नीति-विमर्श, नवाचार और राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का प्रयास किया।

इससे स्पष्ट है कि विकसित भारत में युवा केवल रोजगार पाने वाले लाभार्थी नहीं बल्कि विकास के सक्रिय भागीदार और परिवर्तनकारी एजेंट हैं।

2. वर्तमान भारत में कौशल विकास की आवश्यकता

तकनीकी परिवर्तन के कारण पारंपरिक रोजगार संरचना तेजी से बदल रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, ऑटोमेशन, डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित अर्थव्यवस्था और प्लेटफॉर्म आधारित रोजगार के विस्तार ने नए कौशलों की मांग उत्पन्न की है।

भारत सरकार की Skill India व्यवस्था में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, जन शिक्षण संस्थान, राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप प्रोत्साहन योजना तथा ITI आधारित प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

ग्रामीण युवाओं के लिए दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना भी महत्वपूर्ण है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को रोजगार-संबद्ध कौशल प्रदान करना है। जून 2025 तक इस योजना के अंतर्गत 17.50 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया गया था और 11.48 लाख से अधिक युवाओं को रोजगार मिला था।फिर भी केवल प्रशिक्षण और प्रमाण-पत्र पर्याप्त नहीं हैं। कौशल की गुणवत्ता, उद्योग की वास्तविक मांग, स्थानीय रोजगार अवसर, करियर मार्गदर्शन, अप्रेंटिसशिप और प्रशिक्षण के बाद रोजगार की निरंतरता भी आवश्यक है।

3. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और कौशल विकास

दीनदयाल उपाध्याय की वैचारिकी में मनुष्य को केवल 'आर्थिक मनुष्य' मानने के बजाय उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित विकास पर बल दिया गया है। इसलिए कौशल विकास को भी केवल नौकरी प्राप्त करने की तकनीकी क्षमता तक सीमित नहीं किया जा सकता।

उनकी दृष्टि से कौशलयुक्त युवा वह है जो-

तकनीकी रूप से सक्षम हो,

नैतिक रूप से उत्तरदायी हो,

सामाजिक रूप से संवेदनशील हो,

आत्मनिर्भर बनने की क्षमता रखता हो,

राष्ट्र एवं समाज के प्रति कर्तव्यबोध रखता हो,

स्थानीय संसाधनों एवं ज्ञान का उपयोग कर सके।

इस दृष्टि से आधुनिक Skill Development को Skill + Character + Creativity + Social Responsibility के समन्वित मॉडल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

4. स्वदेशी और स्थानीय कौशल

दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक दृष्टि में स्वदेशी और स्थानीय आवश्यकताओं का विशेष महत्व है। कौशल विकास में इसका अर्थ स्थानीय अर्थव्यवस्था, पारंपरिक शिल्प, कृषि, हस्तशिल्प, पर्यटन, औषधीय पौधों, खाद्य प्रसंस्करण, ग्रामीण उद्योग और स्थानीय सेवाओं से संबंधित कौशल को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ना है।

हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में पर्यटन, बागवानी, हस्तशिल्प, जैविक कृषि, आयुर्वेद, पर्वतीय उत्पाद, साहसिक पर्यटन और डिजिटल सेवाओं के क्षेत्र में स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार एवं उद्यमिता की व्यापक संभावनाएँ हैं।

इस प्रकार 'स्थानीय कौशल + आधुनिक तकनीक + बाजार' का मॉडल विकसित भारत के ग्रामीण एवं पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

5. अंत्योदय और कौशल विकास

दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय अवधारणा विकास के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचने पर बल देती है। कौशल विकास की वास्तविक सफलता तभी मानी जाएगी जब ग्रामीण, आर्थिक रूप से कमजोर, दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले, दिव्यांग, महिलाएँ तथा सामाजिक रूप से वंचित युवा भी गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण एवं रोजगार अवसर प्राप्त कर सकें।

इस संदर्भ में डिजिटल प्लेटफॉर्म, मोबाइल स्किलिंग, स्थानीय प्रशिक्षण केंद्र, सामुदायिक प्रशिक्षण मॉडल तथा उद्योग-शैक्षणिक संस्थान सहयोग महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

6. आर्थिक लोकतंत्र और युवा उद्यमिता

दीनदयाल उपाध्याय आर्थिक लोकतंत्र को आर्थिक व्यवस्था के महत्वपूर्ण आधार के रूप में देखते थे। आधुनिक संदर्भ में इसका एक व्यावहारिक अर्थ यह हो सकता है कि युवाओं को केवल नौकरी खोजने वाला न बनाकर नौकरी देने वाला और उद्यमी बनाने पर बल दिया जाए।

स्टार्टअप, सामाजिक उद्यम, ग्रामीण उद्यम, सहकारी संस्थाएँ, स्वयं सहायता समूह, डिजिटल कॉमर्स और स्थानीय उत्पादन इकाइयाँ युवाओं की आर्थिक भागीदारी को व्यापक बना सकती हैं। MY Bharat जैसे प्लेटफॉर्म भी युवाओं को experiential learning, volunteering, mentorship और नेतृत्व के अवसरों से जोड़ रहे हैं।

निष्कर्ष एवं समाधान

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विकसित भारत @2047 की प्राप्ति में युवा कौशल विकास की केंद्रीय भूमिका है। भारत की युवा आबादी को उत्पादक मानव पूंजी में परिवर्तित करने के लिए कौशल विकास को केवल प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप में नहीं बल्कि राष्ट्रीय मानव संसाधन विकास की समग्र रणनीति के रूप में देखना होगा।दीनदयाल उपाध्याय की वैचारिकी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करती है। एकात्म मानववाद व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, स्वावलंबन, सामाजिक समरसता, आर्थिक लोकतंत्र और अंत्योदय पर बल देता है। इन सिद्धांतों को आधुनिक कौशल विकास के साथ जोड़ने पर एक ऐसा मॉडल विकसित हो सकता है जो आर्थिक विकास के साथ मानवीय विकास को भी महत्व दे।

प्रमुख समाधान

पहला, कौशल प्रशिक्षण को उद्योग की वास्तविक मांग से जोड़ा जाए और प्रशिक्षण संस्थानों तथा उद्योगों के बीच मजबूत साझेदारी विकसित की जाए।

दूसरा, विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा, अप्रेंटिसशिप और उद्यमिता को मुख्यधारा की शिक्षा का हिस्सा बनाया जाए।

तीसरा, AI, मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा, डेटा विश्लेषण, रोबोटिक्स, हरित प्रौद्योगिकी और डिजिटल उद्यमिता जैसे भविष्य के कौशलों के साथ पारंपरिक भारतीय एवं स्थानीय कौशलों का समन्वय किया जाए।

चौथा, ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में स्थानीय अर्थव्यवस्था पर आधारित कौशल विकास केंद्र स्थापित किए जाएँ।

पाँचवाँ, कौशल विकास को चरित्र निर्माण, नैतिकता, नेतृत्व, राष्ट्रबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जाए।

छठा, कौशल प्रशिक्षण के परिणामों का मूल्यांकन केवल प्रमाण-पत्रों की संख्या से नहीं बल्कि रोजगार, आय में वृद्धि, उद्यम स्थापना, उत्पादकता और सामाजिक प्रभाव के आधार पर किया जाए।

सातवाँ, 'अंत्योदय आधारित कौशल विकास' के अंतर्गत समाज के अंतिम व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण कौशल अवसर पहुँचाए जाएँ।

इस प्रकार दीनदयाल उपाध्याय की वैचारिकी और आधुनिक कौशल विकास नीति का समन्वय भारत के लिए एक ऐसे विकास मॉडल का निर्माण कर सकता है जिसमें आर्थिक समृद्धि, आत्मनिर्भरता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय गरिमा साथ-साथ आगे बढ़ें।

भविष्य में शोध की संभावनाएँ

विषय पर भविष्य में अनेक स्तरों पर शोध किया जा सकता है। प्रथम, विभिन्न राज्यों में कौशल विकास योजनाओं की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। द्वितीय, दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक वैचारिकी और वर्तमान Skill India कार्यक्रमों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। तृतीय, हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में पर्यटन, कृषि, हस्तशिल्प और डिजिटल अर्थव्यवस्था आधारित युवा कौशल मॉडल का क्षेत्रीय अध्ययन किया जा सकता है। चतुर्थ, AI और स्वचालन के दौर में भारतीय युवाओं के लिए आवश्यक भविष्य-कौशल का अध्ययन किया जा सकता है। पंचम, अंत्योदय आधारित कौशल विकास के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों पर अनुभवजन्य शोध किया जा सकता है।

भविष्य के शोध में मात्रात्मक सर्वेक्षण, केस स्टडी, फील्डवर्क और युवाओं के अनुभवों को सम्मिलित करके अधिक व्यापक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं। विशेष रूप से "एकात्म मानववाद आधारित कौशल विकास मॉडल" विकसित करना एक महत्वपूर्ण संभावित शोध क्षेत्र हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. उपाध्याय, दीनदयाल। (1965)। एकात्म मानववाद। सुरुचि प्रकाशन।
2. उपाध्याय, दीनदयाल। (1958)। भारतीय अर्थनीति: विकास की एक दिशा। राष्ट्रधर्म प्रकाशन।
3. उपाध्याय, दीनदयाल। (1960)। राष्ट्र जीवन की समस्याएँ। राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन।
4. उपाध्याय, दीनदयाल। (1968)। राष्ट्र जीवन की दिशा। भारतीय जनसंघ।
5. उपाध्याय, दीनदयाल। (1951)। दो योजनाएँ: एक मूल्यांकन। राष्ट्रधर्म प्रकाशन।
6. सोनी, सुरेश कुमार। (2010)। दीनदयाल उपाध्याय: एक जीवंत मानवतावादी। दीनदयाल शोध संस्थान।
7. दीनदयाल शोध संस्थान। (2020)। एकात्म मानववाद। दीनदयाल शोध संस्थान।
8. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।
9. भारत सरकार, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय। (2015)। राष्ट्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता नीति 2015। भारत सरकार।
10. भारत सरकार, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय। (2025)। कौशल विकास एवं उद्यमिता से संबंधित वार्षिक प्रतिवेदन। भारत सरकार।
11. भारत सरकार, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय। (2026)। विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2026। भारत सरकार।
12. भारत सरकार, प्रेस सूचना ब्यूरो। (2026)। कौशल विकास के माध्यम से युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि। भारत सरकार।
13. भारत सरकार, प्रेस सूचना ब्यूरो। (2025)। दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना: ग्रामीण युवाओं के कौशल एवं रोजगार से संबंधित पहल। भारत सरकार।
14. नीति आयोग। (2026)। विकसित भारत@2047 के लिए कौशल विकास का पुनर्कल्पन: Reimagining Skilling for Viksit Bharat@2047। भारत सरकार।
15. नीति आयोग। (2026)। कौशल विकास द्वारा रोजगार क्षमता: कौशल विकास की सर्वोत्तम प्रथाओं का संकलन। भारत सरकार।
16. नीति आयोग। (2025)। भारत में कौशल विकास और रोजगार का भविष्य: नीतिगत परिप्रेक्ष्य। भारत सरकार।
17. भारत सरकार। (2023)। मेरा युवा भारत: युवाओं को सशक्त बनाने और विकसित भारत के निर्माण की पहल। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय।
18. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम। (2024)। भारत कौशल रिपोर्ट 2024। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम।
19. शर्मा, रमेश। (2016)। पंडित दीनदयाल उपाध्याय: जीवन, दर्शन और विचारधारा। प्रभात प्रकाशन।
20. त्रिपाठी, शिवकुमार। (2017)। भारतीय राजनीतिक चिंतन में एकात्म मानववाद। भारतीय ज्ञानपीठ।